आरती श्री विघ्न विनाशक जी की

गणपति की सेवा मंगल मेवा,
सेवा से सब विघ्न टरें ।
लोक तीन तैंतीस देवता,
द्वार खड़े सब अर्ज करें ।

ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण वाम विराजै,
अरु आनन्द सों चंवर करें ।
धूप दीप और लिए आरती,
भक्त खड़े जयकार करें । गण...

गुड़ के मोदक भोग लगत हैं,
मूषक वाहन चढ्या सरें ।
सौम्य रूप से ये गणपति के,
विघ्न भाग जा दूर परें । गण...

भादों मास और शुक्ल चतुर्थी,
दिन दोपारा पूर परें ।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी ने,
दुर्गा मन आनन्द भरें । गण...

अद्भुत बाजा बज्या इन्द्र का,
देववधू जहं गान करैं ।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो,
नाम सुन्या सब विघ्न टरैं । गण...

आन विधाता बैठे आसन,
इन्द्र अप्सरा नृत्य करें ।
देख देव ब्रह्मा जी जाको,
विघ्न विनाशक नाम धरैं । गण...

एकदन्त गजबदन विनायक,
त्रिनैन रूप अनूप धरैं ।
पग थंभा सा उदर पुष्ट है,
देख चन्द्रमा हास्य करै । गण...

दै शराप श्रीचन्द्र देव को,
कलाहीन तत्काल करैं ।
चौदह लोक में फिरै गणपति,
तीन भुवन में राज्य करैं । गण...

उठ प्रभात जब करें ध्यान कोई,
वाके कारज सबै सरैं ।
पूजा काल गावै आरती,
वाके सिर यशक्षत्र फिरै । गण...

गणपति की पूजा पहले करनी,
काम सभी निर्विघ्न सरैं ।
श्री परताप गणपतिजी की,
हाथ जोड़ स्तुति करैं । गण...

विवरण

भगवान गणपति की सेवा करने से शुभ फल मिलता है, तथा उनकी सेवा से सभी प्रकार के विघ्न टल जाते हैं । तीनों लोकों के तैंतीस देवता द्वार पर खड़े उनकी वन्दना कर रहे हैं ।

ऋद्धि-सिद्धि उनके दाहिने एवं बाँए विराज रहीं हैं, तथा आनन्द के साथ चँवर डुला रही हैं । धूप-दीप एवं आरती लिये भक्त जन उनकी जयजयकार कर रहें हैं। गुड़ के लड्डू भोग लग रहें हैं, एवं मूष की सवारी करके आप शोभायमान हो रहें हैं । आपके इस सुन्दर रूप को देखकर विघ्न भी परे हट जाता है ।

भाद्र मास के, शुक्ल पक्ष में, चतुर्थी तिथि को आप दिन-दोपहर में जन्म लिए जिससे माँ भवानी का मन आनन्द से भर गया ।

भगवान इन्द्र का बाजा अद्‌भुत रूप से बजने लगा, देवताओं की वधुएँ मंगल गान करने लगी, भगवान शंकर के आनन्द की सीमा न रही, आपका नाम सुनकर ही सभी विघ्न दूर हो जाते हैं । स्वयं विधाता भी आकर अपने आसन पर बैठे, इन्द्र की अप्सराएँ नृत्य करने लगीं, तथा ब्रह्मा जी स्वयं जाकर उनको देखे और उनका नाम विघ्नविनाशक रखें ।

ये एक दाँत वाले हैं हाथी के समान दिखने वाले इस विनायक भगवान के तीन नेत्र हैं, जिससे इनका रूप और भी अनुपम रूप धारण कर लेता है । इनके थंभ के समान पैर एवं लम्बे उदर को देखकर चन्द्रमा हँसी उड़ाने लगे जिससे चन्द्र देव को भी श्राप देकर उन्हे तत्काल कलाहीन कर दिए ।

ये चौदह लोक में भ्रमण करते हैं, तथा तीनों भुवन में राज्य करते हैं । प्रातः काल में उठकर जो इनका ध्यान करता है, उसके ये सभी कार्य पूरे कर देते हैं ।

पूजा के समय जो इनकी आरती गाता है, उसे ये यशस्वी बनाते हैं । भगवान गणेश जी की पूजा सर्वप्रथम करनी चाहिए, इससे सभी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होतें हैं । श्री परताप जी गणेश जी की हाथ जोड़कर स्तुति कर रहें हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.